काशी मरणान्मुक्ति

लेखक : मनोज ठक्कर/रश्मि छाजेड़ **मूल्य :** 360.00

शिव ॐ साई प्रकाशन, इन्दौर से प्रकाशित तथा यशस्वी कथाकार श्री मनोज ठक्कर एवं रश्मि छाजेड़ द्वारा प्रणीत 'काशीमरणान्मुक्ति' उपन्यास का यह एक वर्ष में तीसरा संस्करण है। शिवस्वरूप काशी का माहात्म्य सर्वविदित है। काशी में जीना और काशी को जीना दो बातें हैं। जो व्यक्ति काशी को जीता है, वही मुक्ति का अधिकारी होता है। क्योंकि यह शिव की अतिप्रिय नगरी है जो धरती पर नहीं, काशी विश्वनाथ के त्रिशूल पर बसी है। बाबा भैरव काशी के कोतवाल हैं। भैरवादिगण इसकी रक्षा करते हैं। माता अन्नपूर्णा सबकी पालनहार हैं।

यह विश्व की प्रचीनतम नगरी है। यहाँ शिव और साधना और शव-साधना का माहात्म्य अधिक है। प्राय: लोग यह समझते हैं कि काशी में मरने से मुक्ति मिलती है, पर उन्हें समझना चाहिए कि काशी में ही मरण मंगलोत्सव है। क्योंकि यहाँ श्मशान नहीं महादेव का महाश्मशान है। कहा गया है- मरण मङ्गल यत्र विभूर्तिभूतिदा सदा। इसके ठीक विपरीत जिस व्यक्ति का अशन-वसन तथा निवास काशी में विधिपूर्वक नहीं होता, उसके लिए मोक्षदायिनी काशी मगध के समान दुर्गतिदायिनी और शीतलतरंगा गंगा अंगार के समान संतापकारिणी हो जाती है। पुराणों में कहा गया है-

अशनं वसनं वासो येषाञ्चैवा विधानत: ।
मगधेन समा काशी गङ्गाप्यङ्गार वाहिनी ।।

ऐसा न करने पर व्यक्ति अति वेदना का शिकार होता है। क्योंकि काशी में मरने वाले का साक्षात् यमराज से नहीं, बल्कि बाबा भैरव से होता है। और जो काशी में रहकर दुराचार करता है, उसे तमाम भयंकर भैरवी यातनाओं से गुजरना पड़ता है जो यमराज की अपेक्षा अति कष्टप्रद होता है। 'राम-नाम' का तारक मंत्र काशी के महाश्मसान पर ही प्राप्त होता है जिससे जीव सदा-सर्वदा के लिए आवागमन से मुक्त हो जाता है।

इस अप्रतिम उपन्यास में काशी के बारे में अनेकानेक तथ्यों को प्रकाश में लाने का स्तुत्य प्रयास किया गया है। काशी से जुड़े उन तमाम संतों-महात्माओं-विचारकों की अनुभूतियों, उक्तियों और रहस्यों को समेट कर कृति को पूर्णता प्रदान करने का प्रशंसनीय प्रयास लेखक-द्वय द्वारा किया गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि भाषा का सौष्ठव अति रोचक एवं मर्मस्पर्शी है। यह अपने ढंग का हिन्दी में अनूठा उपन्यास है जो काफी शोध के बाद रोचक ढंग से प्रकाश में आया है। हिन्दी-संस्कृत साहित्य एवं भाषा के विश्रुत आचार्य डॉ. विद्यानिवास मिश्र काशी को मरने के लिए नहीं, न मरने के लिए मानते हैं, यह एक दार्शनिक विवेचना है। आज के युग में धर्म की चिरंतरता और उसके शाश्वत मूल्यों, परंपराओं को जिस उत्साह और रोचकता के साथ इसमें प्रतिपादित किया गया है, वह नि:संदेह एक ही जगह दुर्लभ है।

चूँकि काशी का अर्थ ही प्रकाश देने वाली है। अर्थात् यहाँ अँधेरे का कोई अस्तित्व ही नहीं है। ठक्कर जी और छाजेड़ जी ने इस रहस्यमय प्रकाश को जगत्व्यापी कर जन कल्याणार्थ उत्कृष्ट कृति का प्रणयन किया है। 510 पृष्ठों में आबद्ध इस औपन्यासिक कृति का एक ही वर्ष में तीन संस्करण प्रकाशित होना, वस्तुत: इसकी सार्थकता और लोकप्रियता का द्योतक है।

हिन्दी कथा जगत में कृति का व्यापक स्वागत हो और लेखकद्वय की कीर्ति-प्रतिष्ठा में वृद्धि हो, हमारी हार्दिक शुभकामनाएँ हैं।

-सुरेन्द्र वाजपेयी, वाराणसी

संपर्क : शिव ॐ साई प्रकाशन, 95/3, वल्लभनगर, इन्दौर-3

खत्री समाज दर्पण

लेखक : रतन कुमार कपूर

ऐतिहासिक दृष्टि से वैदिक आर्य क्षत्रियों की मूल संतानें होते हुए भी पूर्ववर्ती काल में खत्रियों की नई-नई अल्लें बनती गयीं। बाद में अनेक बड़े-बड़े समूह भी बने। जिन्हें अपनी कर्मनिष्ठा के कारण काफी प्रसिद्धि मिली। इसी संस्कार और कर्मठता को संरक्षित करने की प्रेरणा इस पुस्तक से प्राप्त होती है।

'खत्री समाज दर्पण' पुस्तक जातीय एकता और समरसता की प्रतीक है। इसका लेखन और संकलन अखिल भारतीय खत्री महासभा के संगठन मंत्री श्री रतन कुमार कपूर ने तथा संशोधन एवं प्रकाशन श्री राजेन्द्र प्रसाद बेरी ने किया है। इस पुस्तक के 18 अध्यायों में खत्री जाति के विलक्षण इतिहास के कुछ अंश, खत्री समाज की परम्परा, खत्री बुजुर्गों के संदेश, संस्कार एवं प्रथाएँ, शिठनी/छंद, प्रमुख व्रत-त्योहार कथा, खत्रियों के अशुभ संस्कार, जातिगान आदि संदर्भों में पुस्तक का वर्णन समायोजित किया गया है। खत्री समाज को सुगठित एवं विस्तृत करने की दिशा में ऐसे प्रकाशन का विशेष महत्व है।

जातिभूषण स्व. कृष्णचन्द्र बेरी एवं स्व. श्यामा बेरी की पावन स्मृति को समर्पित इस पुस्तक में वर्ष 2010 में आयोजित खत्री बुजुर्ग सम्मान के अन्तर्गत खत्री-खत्राणियों ने अपने सम्मान के उपलक्ष्य पर जो संदेश समाज के नाम दिए हैं, वे अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इन संदेशों से बीते अनुभवों का ज्ञान होता है और समाज तथा देश के लिए सकारात्मक सोच विकसित करने की दिशा प्राप्त होती है जो सर्वथा अनुकरणीय है। कोई भी समाज अपने भावी प्रतिभावान और सक्रिय सदस्यों के बूते ही संचालित होता है।

साहित्य भारती पब्लिकेशन्स प्रा. लि., वाराणसी के निदेशक एवं हिन्दी प्रकाशन के शलाका पुरुष श्री कृष्णचंद्र बेरी के सुपुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद बेरी ने इस पुस्तक को प्रकाशित एवं लोकार्पित करा के अपनी सदाशयता और समाज के प्रति आत्मिक लगाव का जो परिचय दिया है वह सदा-सर्वदा स्तुत्य है। पुस्तक के अन्त में खत्री समाज की तीन पीढ़ियों के महासंगम के प्रेरणास्रोतों का सचित्र परिचय एवं गतिविधियों के छायाचित्रों को भी इसमें प्रकाशित किया गया है। नि:संदेह राष्ट्रोत्थान तथा खत्री समाज के समुन्नयन एवं विकास में पुस्तक की प्रासंगिकता उपयोगी सिद्ध होगी। पुस्तक के प्रणयन एवं प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

संपर्क- साहित्य भारती पब्लिकेशन्स प्रा.लि. पिशाचमोचन, वाराणसी